• कनेक्शन...

श्रीकृष्ण और मोर का पंख

द्वापरयुग में जगत के पालनहार भगवन श्री हरि विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में अपना आठवां अवतार लिया था। भगवान श्रीकृष्ण सिर पर मुकुट, उसमें लगा मोर पंख, हाथों में बांसुरी और पीतांबर धारण करते हुए ही ज्यादातर प्रतिमाओं और तस्वीरों में नजर आते हैं। उनका ये रूप भक्तों को बहुत आकर्षित करता है। भक्तों ने भगवान के इस रूप को अपने हृदय में विशेष स्थान दिया है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मुकुट में मोर के पंख को ही क्यों स्थान दिया? इसके पीछे का कारण श्रीकृष्ण का राधारानी के प्रति अटूट प्रेम बताया जाता है, लेकिन भगवान के मोर का पंख धारण करने के पीछे त्रेता युग यानी भगवान श्री राम के युग की भी एक कहानी है।

ब्रज की मान्यताओं के अनुसार, मोर का पंख भगवान श्रीकृष्ण और राधा रानी के दिव्य प्रेम का प्रतीक है।

इसमें प्रेम, समर्पण और पवित्रता का भाव है। यही कारण है कि जन्माष्टमी और भगवान श्रीकृष्ण के अन्य त्योहारों में मोर के पंख का विशेष महत्व बताया गया है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, घर के मंदिर या पूजा स्थान में मोर का पंख रखना शुभ होता है। इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और नकारात्मकता नहीं आती है।

मोर के पंख का संबंध भगवान विष्णु के श्रीराम अवतार से भी है। पौराणिक कथा के अनुसार, वनवास के दौरान सीता हरण के बाद भगवान श्री व्याकुलता से प्रकृति और पशु पक्षियों सबसे माता सीता का पता पूछते हैं। तब एक मोर उनसे कहा कि उसने देखा है कि रावण किस ओर माता सीता को लेकर गया है। मोर ने भगवान से कहा कि वो उनको वो रास्ता दिखा सकता है, जिससे रावण माता सीता को लेकर गया, लेकिन मोर ने प्रभु से कहा कि वो तो उड़ेगा और जगत के नाथ पैदल चलेंगे।

श्रीराम मोर की भक्ति से प्रसन्न हुए : उस स्थिति में मोर ने प्रभु राम को एक उपाय बताया। उसने कहा कि वो उड़ते हुए अपने पंख जमीन पर गिराता हुआ चलेगा, जिससे श्रीराम रास्ता न भटकें. इसके बाद मोर आकाश मार्ग से उड़ते हुए बीच-बीच में अपना एक पंख गिराने लगा। ताकि श्रीराम और लक्ष्मण रास्ता न भटकें। मोर के पंख गिराने से उसके पास पंख नहीं बचे और उसकी मृत्यु निकट आ गई. भगवान ने जब देखा कि मोर उनकी सेवा में प्राण त्यागने तक को आतुर है, तो वो उसकी भक्ति से बहुत प्रसन्न हुए।

• वास्तु...

ग्रहों के मुताबिक लगाएं ये शुभ पौधे

मानसून के समय बारिश होने की वजह से हरियाली छाई रहती है। ये हरियाली आंखों को सुकून देती है। पेड़-पौधे, लताएं और जड़ी-बूटियां तेजी से बढ़ती और खिलती हैं इसलिए इस समय पौधा लगाना और वृक्षारोपण करना सबसे आसान होता है। वृक्षारोपण को पुण्य का कर्म माना जाता है। ज्योतिष में कई शुभ पौधों को ग्रहों और नक्षत्रों से जोड़ा गया है। ऐसा माना जाता है कि पेड़, पौधों और वृक्षों को भी ग्रहों व नक्षत्रों की एनर्जी का लाभ मिलता है।

ज्योतिष के मुताबिक, पौधों को लगाने से न केवल ग्रहों का आशीर्वाद मिलता है, बल्कि धन के साथ-साथ मानसिक शांति और समृद्धि भी बढ़ती है। मानसून का मौसम कुछ पौधों को लगाने के लिए सबसे उपयोगी है क्योंकि इस दौरान मिट्टी में पर्याप्त नमी और वातावरण में आर्द्रता होती है।

ज्योतिष के मुताबिक, ग्रहों का संबंध कई प्रकार के वृक्षों और पौधों से भी होता है। ज्योतिष में 27 नक्षत्रों के लिए एक विशेष वृक्ष या पौधे का उल्लेख किया गया है। यदि किसी ग्रह का प्रभाव अच्छा नहीं है तो उस ग्रह से संबंधित पौधे लगाना और उनकी रोजाना देखभाल करना शुभ और फलदायी माना जाता है। आइए जानते हैं कि किस ग्रह को मजबूत करने के लिए कौन सा पौधा इस समय लगाना चाहिए?

- **सूर्य**-सूर्य ग्रह से संबंधित व्यक्ति को सशक्त बनाने के लिए पीपल, बरगद, नीम जैसे मजबूत लकड़ी वाले पेड़ लगाने चाहिए। इससे आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और स्वास्थ्य में सुधार होता है।
- **चंद्रमा**-चंद्रमा ग्रह का लाभ लेने के लिए पलाश जैसे रसीले या दूध से संबंधित पेड़ लगाने चाहिए। इससे मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन प्राप्त होता है।
- **मंगल**-मंगल ग्रह के शुभ प्रभाव को प्राप्त करने के लिए बबूल जैसे कांटेदार पेड़ या औषधीय गुणों वाले नीम के पौधे लगाने चाहिए। उसकी रोजाना देखभाल करनी चाहिए ताकि वे आसानी से ग्रो गरते रहें। इससे साहस, ऊर्जा और रोगों से सुरक्षा मिलती है।
- **बुध**-बुध ग्रह को मजबूत करने के लिए फल न देने वाले पेड़ जैसे तुलसी लगाना उचित है। बुध ग्रह मजबूत होने पर बुद्धि, संवाद कौशल और व्यापार में सफलता मिलती है।
- **बृहस्पति**-बृहस्पति ग्रह को मजबूत करने के लिए फलदार पेड़ लगाना सर्वोत्तम है। बृहस्पति ज्ञान, सद्गुण और समृद्धि लाता है।
- **शुक्र**-शुक्र ग्रह के सकारात्मक लाभ प्राप्त करने के लिए फूलों के पेड़ लगाएं। इससे कला, सौंदर्य और आकर्षण भी बढ़ता है।
- **शनि**-यदि आप अपने जीवन में शनि ग्रह का सकारात्मक प्रभाव चाहते हैं, तो शमी जैसे कम आकर्षक या कम दिखने वाले पेड़ लगाएं। इससे कठिनाइयों पर काबू पाने की शक्ति मिलती है और जीवन में स्थिरता आती है।

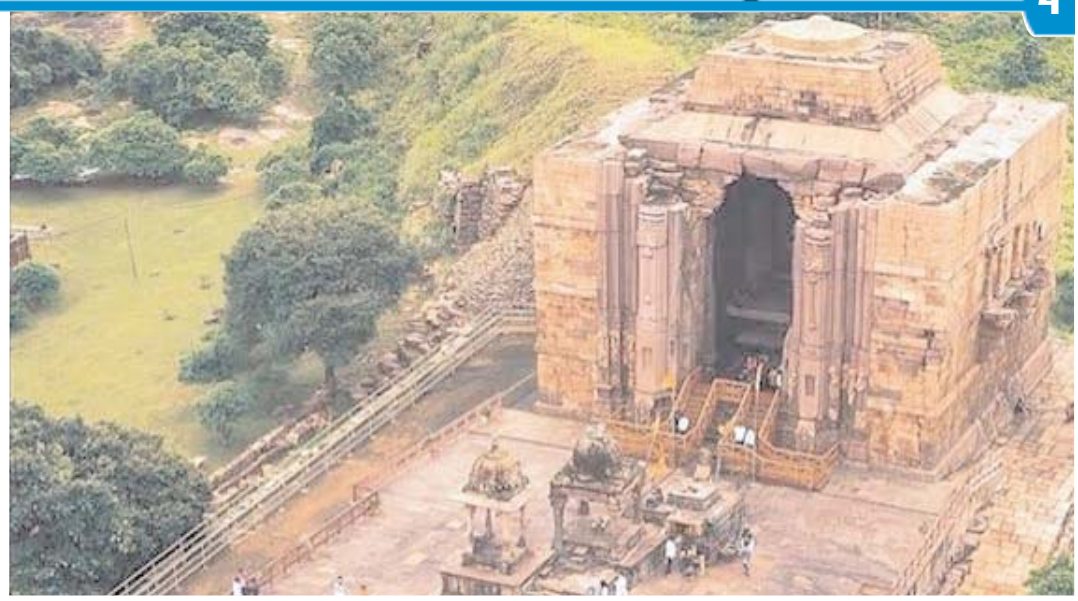

ये हैं भारत के प्रसिद्ध शिव मंदिर

अमरनाथ गुफा को बाबा बर्फानी के नाम से भी जाना जाता हैं, शिव भक्तों के लिए यह सबसे प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है। अमरनाथ गुफा के मंदिर की यह विशेषता है की यहां अपने आप ही बर्फ के शिवलिंग का निर्माण होता है।

अमरनाथ की यह गुफा कश्मीर की खूबसूरत बर्फीली घाटियों के बीच पाई जाती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस गुफा में भगवान भोलेनाथ ने इस गुफा में माता पार्वती को अमर कथा सुनाई थी...

सा हिन्दू धर्म में शिव पूजा की बहुत अधिक महत्ता बताई जाती है। भगवान शिव त्रिदेवों में से एक देव है। बताया जाता है की भगवान शिव यह पूरा ब्रह्माण्ड अपने अंदर समाएं हुए हैं, यह दुनिया चाहे रहे या ना रहे लेकिन शिव हमेशा रहेंगे। शिव को देवों के देव महादेव भी कहा जाता है, इसके साथ ही वे शंकर, नीलकण्ठ, रूद्र, भोलेनाथ व महाकाल आदि के नाम से भी जाने जाते है।

- **अमरनाथ गुफा**-अमरनाथ गुफा को बाबा बर्फानी के नाम से भी जाना जाता हैं, शिव भक्तों के लिए यह सबसे प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है। अमरनाथ गुफा के मंदिर की यह विशेषता है की यहां अपने आप ही बर्फ के शिवलिंग का निर्माण होता है। अमरनाथ की यह गुफा कश्मीर की खूबसूरत बर्फीली घाटियों के बीच पाई जाती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस गुफा में भगवान भोलेनाथ ने इस गुफा में माता पार्वती को अमर कथा सुनाई थी। बताया जाता है की जब शिव यह अमर कथा सुना रहे थे तब वहां एक कबूतर का जोड़ा भी था जो यह कथा सुनकर अमर हो गया था, और आज भी यह काफी श्रद्धालुओं द्वारा देखा जाता है।
- **सोमनाथ मंदिर**-सोमनाथ मंदिर भारत के सबसे प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिरो में से एक है। भगवान शिव का यह मंदिर भारत के पश्चिमी तट पर गुजरात प्रदेश के सौराष्ट्र में प्रभास क्षेत्र में स्थित है। यह मंदिर 12 ज्योतिर्लिंग में से एक माना जाता है, जिसके बारे में कई सारे महाग्रंथों में विस्तार से बताया है। इस मंदिर के बारे में यह बताया जाता है इसके भवन का बहुत बार पुर्ननिर्माण करवाया जा चुका है। पौराणिक कथाओं के अनुसार चंद्रदेव ने यहां भगवान शिव की आराधना की थी जिनको सोम नाम से भी जानते थे, जिसके चलते इसका नाम सोमनाथ पड़ा।
- **केदारनाथ मंदिर**-केदारनाथ का यह मंदिर शिव-प्रेमियों के लिए एक अलग महत्व रखता है। भारत के शिव-भक्तों के मन में जीवन में एक बार इस मंदिर में जाने की चाह हमेशा प्रबल रहती है। उत्तराखंड में स्थित यह शिवमंदिर तीर्थ के चारधामों में से एक है। इन चार धामों में केदारनाथ के अलावा गंगोत्री, यमुनोत्री और बद्रीनाथ जैसे तीर्थ स्थल शामिल है। पहाड़ियों के बीच स्थापित इस मंदिर में सर्दियों के समय काफी मात्रा में बर्फबारी होती है। इसलिए यह मंदिर अप्रैल माह के अंत से लेकर नवम्बर माह तक खुलता है।
- **भोजपुर शिव मंदिर**-इस शिव मंदिर की अगर बात की जाए तो यह मध्यप्रदेश राज्य के एक जिले रायसेन में बेतवा नदी के किनारे स्थित है। भोजपुर शिव मंदिर एक प्राचीन मंदिर है जो की अपने भवन के अधूरे निर्माण के कारण जाना जाता है। इस मंदिर में एक विशाल शिवलिंग स्थापित है जिसका निर्माण चट्टान से हुआ है। इस शिवलिंग की बात की जाए तो यह देश के सबसे ऊंचे और विशालकाय शिवलिंगो में से एक माना जाता है। मध्य-प्रदेश का यह प्रसिद्ध शिव मंदिर देश विदेश के सभी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है।
- **अन्नामलाई मंदिर**-अन्नामलाई मंदिर तमिलनाडु के अन्नामलाई हिल्स में स्थित है। यह मंदिर अपनी ऊंचाई और भव्य मंदिर परिसर के लिए जाना जाता है। इस मंदिर के बारे मे यह माना जाता है की यहां भगवान शिव ने ब्रह्मा जी को श्राप दिया था। इस मंदिर के भव्य परिसर में चार द्वार है जिन्हें गोपरम भी कहा जाता है। इस मंदिर की स्थापना चोल वंश के शासन के दौरान हुई थी, जिसके बाद अन्य शासकों द्वारा भी इसका पुनर्निर्माण करवाया गया था। पूर्णिमा के समय इस मंदिर में श्रद्धालुओं का सेलाब उमड़ता है, विशेष तौर पर कार्तिक पूर्णिमा के समय यहां एक मेले का भी आयोजन होता है।
- **महाकालेश्वर मंदिर**-भारत के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक महाकालेश्वर मंदिर मध्यप्रदेश राज्य के उज्जैन नगर में स्थित है। उज्जैन महाकाल की नगरी के नाम से प्रसिद्ध है। उज्जैन नगरी में स्थापित यह महाकालेश्वर मंदिर भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। महाकालेश्वर मंदिर में होने वाली आरती भस्म से की जाती है, इसके साथ शिवलिंग का शृंगार भी शमसान से लाई हुई राख से किया जाता है। मध्यप्रदेश में स्थित यह मंदिर भारत में घूमने के लिए सबसे प्रसिद्द मंदिरों में से एक है।

■ पं. नित्यानंद

• मिट्टी...

मां बगलामुखी मंदिर

नलखेड़ा के मां बगलामुखी मंदिर की सबसे अनोखी परंपराओं में पवित्र मिट्टी का प्रसाद शामिल है। श्रद्धालुओं को मंदिर परिसर की मिट्टी प्रसाद के रूप में दी जाती है। भक्त इसे मां का आशीर्वाद मानकर अपने साथ घर ले जाते हैं। धार्मिक मान्यता है कि मंदिर में मां बगलामुखी की शक्ति और सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव होने के कारण यहां की मिट्टी भी विशेष मानी जाती है। मां बगलामुखी मंदिर की पवित्र मिट्टी को लेकर भक्तों के बीच कई तरह की मान्यताएं प्रचलित हैं। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि इसे घर में रखने से नकारात्मक शक्तियों का प्रभाव कम होता है। कुछ लोग इसे घर के पूजा स्थल पर रखते हैं। मान्यता है कि मां बगलामुखी की कृपा से व्यक्ति को बुरी नजर, नकारात्मक ऊर्जा और तंत्र-मंत्र से जुड़ी परेशानियों से सुरक्षा मिलती है। नलखेड़ा का मां बगलामुखी मंदिर मध्य प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश के कई हिस्सों में प्रसिद्ध है। यहां सालभर श्रद्धालुओं का आना-जाना लगा रहता है। विशेष अवसरों जैसे नवरात्रि के दौरान मंदिर में भक्तों की संख्या और भी बढ़ जाती है।

• गणपति बप्पा की पूजा...

बुधवार के दिन पूजा स्थान की अच्छी तरह सफाई करें। अब भगवान गणेश की प्रतिमा या तस्वीर के सामने दीपक जलाएं और पूजा शुरू करें। सबसे पहले गणपति बप्पा को जल अर्पित करें। इसके बाद उन्हें सिंदूर, अक्षत और लाल या पीले फूल चढ़ाएं। भगवान गणेश को दूर्वा घास बहुत प्रिय मानी जाती है, इसलिए पूजा में उन्हें दूर्वा जरूर अर्पित करें। मान्यता है कि गणेश जी को 21 दूर्वा चढ़ाने से वे जल्दी प्रसन्न होते हैं।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित